Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
1846 विश्व इतिहास 1846
10 अक्टूबर 2021
3

दलहनी फसलों का बुवाई पूर्व उपचार: डॉ यूके त्रिपाठी

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ यूके त्रिपाठी ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया की दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसे उकठा, जड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। डॉक्टर त्रिपाठी ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें इसके लिए 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा 1 हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करे तथा बुवाई के पूर्व 5 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें। दलहनी फसलों में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें। जिससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के खड़ी फसल में 2 ग्राम मैनकोज़ेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है डॉक्टर त्रिपाठी ने यह भी बताया कि मटर की फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण हेतु कैराथीन 3 ग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से लाभ होगा। इसके अतिरिक्त फसल चक्र किसान भाई अवश्य अपनाएं जिसमें गन्ना, सरसों, अलसी या गेहूं की खेती को किया जा सकता है। क्योंकि एक ही प्रकार की फसलें बार-बार एक ही खेत में करने से रोग और कीड़ों की संभावना ज्यादा रहती है। उन्होंने बताया कि इस प्रकार किसान भाई अपनी दलहनी फसलों को रोग मुक्त कर सकते हैं तथा दलहनी फसलों से आशातीत उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

Sign in to edit and save changes to this file.

लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक - 339
रविवार, 10 अक्टूबर 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु*
लखनऊ, नोएडा, झांसी और देहरादून से प्रकाशित

दैनिक भास्कर
देश का सबसे विश्वसनीय अखबार

For epaper → www.updainikbhaskar.com

दलहनी फसलों का बुवाई पूर्व उपचार आवश्यक: डॉ. त्रिपाठी

कानपुर। सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ यूके त्रिपाठी ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की।

उन्होंने बताया की दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों उकठा, जड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें इसके लिए 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा 1 हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करे तथा बुवाई के पूर्व 5 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें। दलहनी फसलों में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें। जिससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के खड़ी फसल में 2 ग्राम मैनकोज़ेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है। उन्होने बताया मटर की फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण हेतु कैराथीन 3 ग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से लाभ होगा।

अमर उजाला | 08
रविवार 10.10.2021

अब सात दिन नहीं, केवल चार घंटे में निकलेंगे रेशे

कानपुर। पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल रहीं महिलाएं अब शोध क्षेत्र में भी नाम रोशन कर रही हैं। सीएसए की प्रोफेसर रितु पांडेय ने अलसी के पौधे के तने से केवल चार घंटे में रेशे बनाने की तकनीक खोज ली है। अभी तक तने से रेशे बनाने में सात से दस दिन का समय लगता है।

सीएसए की प्रोफेसर रितु पांडेय ने खोजी तकनीक

सीएसए परिसर स्थित गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग की प्रोफेसर रितु का यह शोध अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हुआ है। तकनीक पेटेंट करा ली गई है। यह सीएसए का पहला पेटेंट है। रितु ने बताया कि अलसी की डंठल को पानी में भिगोने के बाद उसमें पांच प्रतिशत हाइड्रोजेल सॉल्यूशन मिलाया। इस जेल को मिलाने से डंठल पानी जल्दी सोखती है, जिससे रेशा जल्दी छूट जाता है। पानी से डंठल को निकालने के बाद धूप में सुखाने के बाद स्केचिंग मशीन से रेशा निकालते हैं। अलसी से निकलने वाले रेशे में फाइबर ज्यादा पाया जाता है। इसका उपयोग कागज या टेक्निकल टेक्सटाइल बनाने में होता है। इस प्रक्रिया के बाद बची डंठल का प्रयोग फर्नीचर आदि बनाने में किया जाता है। अभी जिस विधि से रेशा बनता है, उसमें पानी सोखने में ही 16 से 18 घंटे लग जाते हैं। कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने प्रो. रितु को बधाई दी है। (संवाद)

दैनिक जागरण
कानपुर, 10 अक्टूबर, 2021 12

शहद और मूंगफली का बनाया जाएगा सेंटर फार एक्सीलेंस

सीएसए को शासन से एक करोड़ रुपये का मिला बजट नई प्रजाति और उत्पादों का होगा मूल्य संवर्धन

जासं, कानपुर: सीएसए विवि में गेहूं और सब्जियों का सेंटर फार एक्सीलेंस पहले ही स्थापित है। अब शहद, मूंगफली, आलू, बकरी व मुर्गी पालन का सेंटर फार एक्सीलेंस बनाया जाएगा। यह सैंटर कृषि विज्ञान केंद्रों के अंतर्गत निर्मित होंगे। शासन की ओर से चार सेंटरों के लिए 25-25 लाख रुपये का बजट मिल गया है।

कुलपति डा. डीआर सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ किसानों की दोगुनी आय के लिए काम कर रहे हैं। उनकी आमदनी बढ़ाने के लिए उत्पादों का मूल्य संवर्धन किया जा रहा है। सेंटर फार एक्सीलेंस से कृषि तकनीक को बढ़ावा मिलेगा। निदेशक प्रसार डा. एके सिंह ने बताया कि अलीगढ़, इटावा, मैनपुरी, फतेहपुर के कृषि विज्ञान केंद्रों में सेंटर फार एक्सीलेंस बनाया जाएगा। अलीगढ़ में

किसानों की आय होगी दोगुनी • फाइल फोटो

शहद, इटावा में आलू, मैनपुरी में मूंगफली और फतेहपुर में बकरी व मुर्गी पालन पर काम होगा। आलू, शहद, मूंगफली का मूल्य वर्धन किया जाएगा। उनके अन्य उत्पाद तैयार होंगे। बकरी की प्रजातियां सेंट्रल इंस्टीट्यूट फार रिसर्च आन गोट से मंगवाई जाएंगी। मुर्गी पालन के लिए कड़कनाथ जैसी प्रजातियों पर काम होगा। किसानों के खेतों पर ट्रायल लगाए जाएंगे। उन्हें प्रशिक्षण भी देने की योजना है।

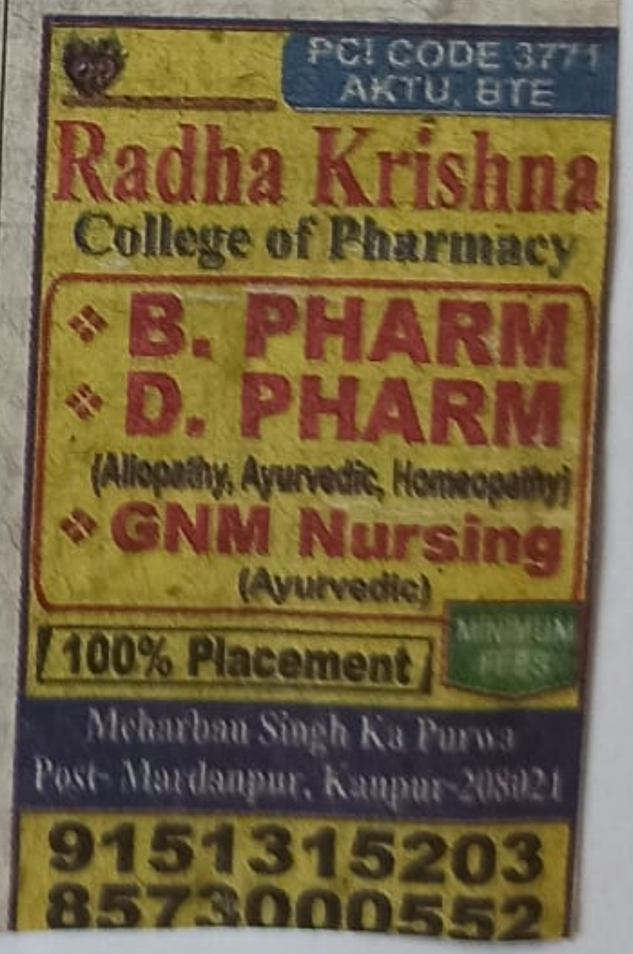

Sign in to edit and save changes to this file.

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

WORLD
खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

शनिवार, 09-10-2021 अंक-371
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

दलहनी फसलों का बुवाई से पूर्व कर लें उपचार : डॉ. यूके

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश पर पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. यूके त्रिपाठी ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम के लिए एडवाइजरी जारी की है। बताया कि दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसे उकठा, जड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णिंत आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। डॉक्टर त्रिपाठी ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें।

इसके लिए एक किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करें तथा बुवाई के पूर्व पांच ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें। दलहनी फसलों

में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि दो ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें। इससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के खड़ी फसल में दो ग्राम मैनकोजेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है।

डॉक्टर त्रिपाठी ने यह भी बताया कि मटर की फसल में चूर्णित आसिता रोग के नियंत्रण हेतु कैराथीन तीन ग्राम 700 लीटर पानी में घोलकर खड़ी फसल में प्रयोग करने से लाभ होगा। इसके अतिरिक्त फसल चक्र अवश्य अपनाएं जिसमें गन्ना, सरसों, अलसी या गेहूं की खेती को किया जा सकता है। क्योंकि एक ही प्रकार की फसलें बार-बार एक ही खेत में करने से रोग और कीड़ों की आशंका ज्यादा रहती है।

खादी ग्रामोद्योग आयोग के पायलट प्रोजेक्ट प्रशिक्षण का उद्घाटन

कानपुर। केंद्र सरकार की संस्था केंद्रीय पादुका प्रशिक्षण संस्थान आगरा ने एमएसएमई विकास संस्थान, फजलगंज में खादी और ग्रामोद्योग आयोग की पायलट परियोजना कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि एमएसएमई के डायरेक्टर वीके वर्मा रहे। सीएफटीआई के असिस्टेंट डायरेक्टर ईश्वर सिंह ने कार्यक्रम में आए चयनित 20 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण की जानकारी दी। इसके बाद एमएसएमई के असिस्टेंट डायरेक्टर राजेश कुमारपॉलीथिन का उपयोग न करने के विषय मे व्याख्यान दिया। सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के पश्चात स्वरोजगार स्थापित करने के आवश्यक गुण बताएं। संचालन सी एफटीआई के शिशिर अवस्थी ने किया। इस दौरान वाईवीआर चौधरी, एसके गनगोल, एनडी तिवारी, मनोज, परवेज, शरद मिश्र, निशा आदि उपस्थित रहे।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

2

वर्ष:12 | अंक:273 | देहरादून, शनिवार, 09 अक्टूबर, 2021 | पृष्ठ:08

दलहन फसलों में रोगों की रोकथाम के लिए जारी की एडवाइजरी

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ यूके त्रिपाठी ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की उन्होंने बताया की दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसे उकठा, जड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है डॉक्टर त्रिपाठी ने बताया कि किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें इसके लिए 1 किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें यह मात्रा 1 हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करे तथा बुवाई के पूर्व 5 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें दलहनी फसलों में झुलसा रोग के प्रबंधन के बारे में बताया कि 2 ग्राम कार्बेंडाजिम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बुवाई करने पर बीज शोधित कर बुवाई करें जिससे झुलसा रोग नियंत्रित रहता है। मसूर की फसल में रतुआ रोग की नियंत्रण के खड़ी फसल में 2 ग्राम मैनकोजेब 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से लाभ होता है।

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद व हल्द्वानी से प्रकाशित

अमृत विचार

वर्ष 31, अंक 276, पृष्ठ 12, मूल्य : 3 रुपये

एक सम्पूर्ण अखबार

र शीर्ष पर रही भारतीय टीम...11

लखनऊ, रविवार, 10 अक्टूबर 2021

www.amritvichar.com

दिल के बेहद करीब है फि

दलहनी फसलों का बुआई पूर्व उपचार आवश्यकः डॉ. त्रिपाठी

कानपुर। सीएसए के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ यूके त्रिपाठी ने रबी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम हेतु किसान भाइयों के लिए एडवाइजरी जारी की। उन्होंने बताया की दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों उकठा, जड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता इत्यादि रोगों का प्रकोप होता है। किसान भाई बुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें इसके लिए एक किलोग्राम ट्राइकोडर्मा को 25 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर बुवाई के 15 दिन पूर्व शाम के समय खेत में मिलाकर हल्की सिंचाई कर दें। यह मात्रा एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होगी। उन्होंने उकठा रोग के प्रबंधन के लिए बताया कि गर्मी में गहरी जुताई अवश्य करें तथा बुवाई के पूर्व 5 ग्राम ट्राइकोडरमा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर दें।

कानपुर। रविवार • 10 अक्टूबर • 2021

राष्ट्रीय सहारा

दलहनी फसलों के बुवाई पूर्व उपचार पर सीएसए की सलाह

कानपुर (एसएनबी)। दलहनी फसलों के बुवाई पूर्व उपचार को लेकर सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि ने किसानों के लिए सलाह जारी की है। विवि के पादप रोग विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ.यूके त्रिपाठी ने रवी फसलों में उगाई जाने वाली दलहनी फसलों (चना, मसूर, मटर) में रोगों की रोकथाम को लेकर किसानों को विभिन्न उपाय करने को कहा है।

खेत में तैयार हो रही दलहन की फसल पर दी वैज्ञानिकों ने सलाह।

> फसल चक्र अवश्य अपनायें किसान, एक ही खेत में बार-बार एक प्रकार की फसलें करने से रोग व कीड़ों की संभावनाएं ज्यादा

सीएसए वैज्ञानिक ने किसानों से फसल चक्र अवश्य अपनाने को कहा है। इसके लिए गन्ना, सरसों, अलसी या गेहूं की खेती की जा सकती है। एक ही प्रकार की फसलें वारम्वार एक ही खेत में करने से रोग व कीड़ों की संभावनाएं ज्यादा रहती है। डॉ.त्रिपाठी ने बताया कि दलहनी फसलों में फफूंदी एवं जीवाणु जनित रोगों जैसेउकठा, जड़ सड़न, झुलसा, रतुआ, चूर्णित आशिता आदि रोगों को प्रकोप होता है। इससे वचने को किसान वुवाई से पूर्व मृदा का शोधन अवश्य करें।